लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 65

शिखरिणी

(प्रत्यग्रगलज्जलिकासङ्कलना)

मार्च 2010 - मार्च 2012

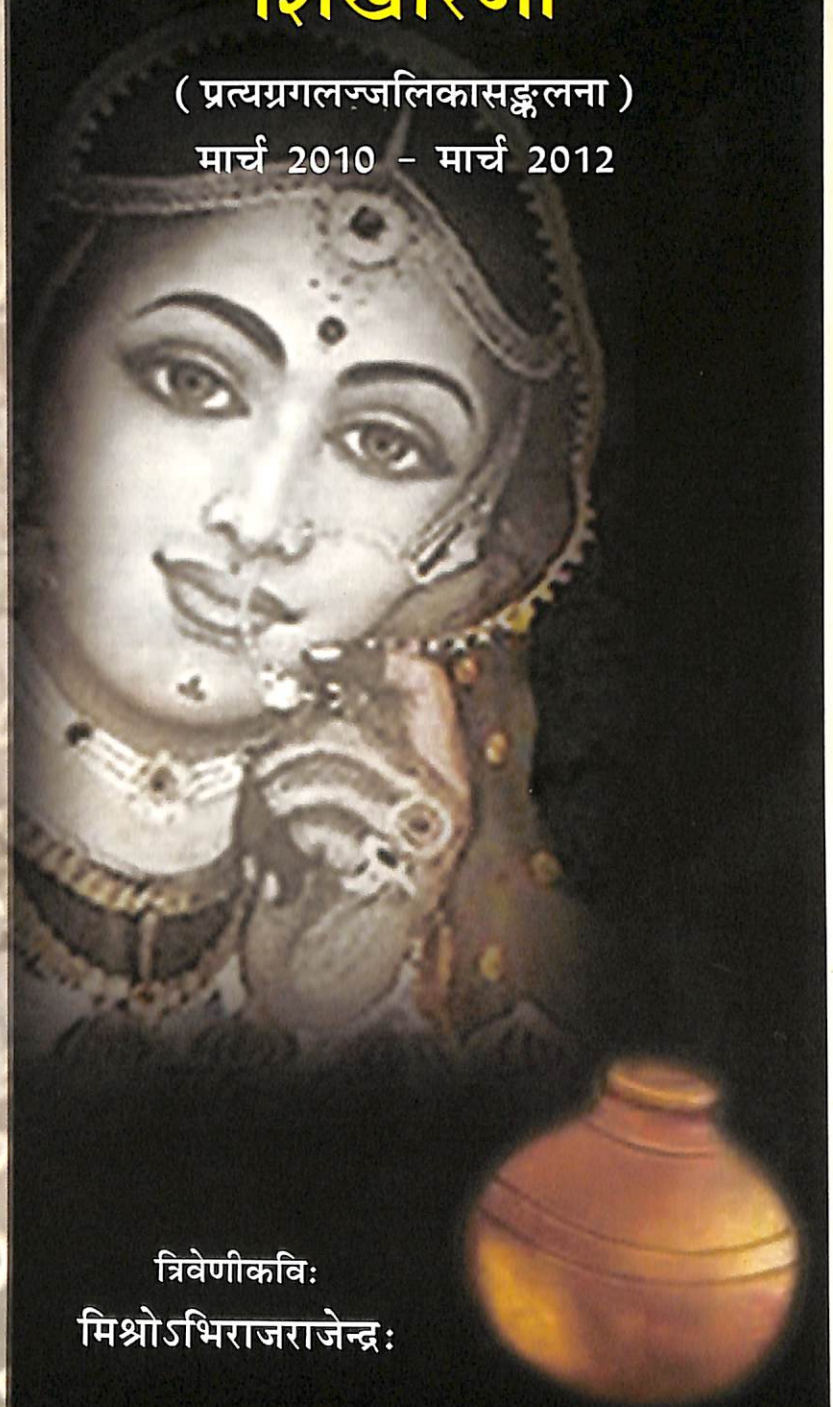

त्रिवेणीकविः

मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः

शिखरिणी

॥ गलज्जलिकासङ्कलना ॥

पुरोवाक्		v
शिखरिणी		vii
1.	मन्दमन्दम्	1
2.	दैवज्ञं कं पृच्छेयम्?	4
3.	किं ततो भविता?	6
4.	शतं धारयेऽहम्	8
5.	लक्षयेऽहम्	10
6.	देहि मे प्रददामि ते	12
7.	ननु कीदृशं जातं पुरम्?	14
8.	सैव राजनेतृताऽस्माकम्	16
9.	कौशेयवासोभिरुर्ण्यते	18
10.	तैर्विदेशे धनं सञ्चितम्	20
11.	त्रुटिर्हन्त जाता	22
12.	निरर्थाऽभवत्	24
13.	भान्ति ता अनुत्तमाः	26
14.	कृतिनोऽभिराजविहगाः	28
15.	चातकोऽहम्	32
16.	समधिकं सार्थकं मन्ये	34
17.	वेपन्ते	36
18.	श्रुतं त्वत्तो मया बन्धो!	38
19.	स्वीयभालं न भिन्धि	40
20.	नो मया निवेद्यन्ते	42
21.	तव मानसे कि वर्तते?	44
22.	लक्षयेऽहम्	46

रेशमी कफन

हाय, आज (तो यह) नदी सूखी दिखाई पड़ रही है। परन्तु सुनते हैं कि यह नाव से पार की जाती थी।। 1।।

इससे बड़ा आश्चर्य भारतराष्ट्र में और क्या होगा कि आज यहाँ तिरंगा झण्डा फहरा रहा है (अर्थात् यह स्वतंत्र है)।। 2।।

जिसके राज्याभिषेक–उत्सव की घोषणा की जा चुकी थी उसीका निर्वासन (वनवास) देख कर दिल बैठा जा रहा है।। 3।।

देवी अहल्या! व्यथित मत होओ। तुम्हारा उद्धारक (दशरथनन्दन) राम, विश्वामित्र द्वारा (अपने) आश्रम में बुलाया जा रहा है।। 4।।

व्यर्थ में ही, बुद्धिबल का घमण्ड मुझे मत दिखाओ। अरे पत्थर के पेट से भी क्या दूब अंकुरित नहीं हो जाती।। 5।।

रागबन्ध (सांसारिक प्रपञ्च) को हरने वाले नारायण सात्विक प्रकृति के हैं। सांसारिक सुख-वैभव पाने के लिए उनका संस्तवन करना भला किस काम का।। 6।।

हे तन्वी! सब कुछ तो तुम्हारी आँखों में ही लिखा हुआ है। तो फिर मुझसे कौन रहस्य छिपा रही हो।। 7।।

मेरे भाई! साँप तो कहीं लहरों में अदृश्य हो चला है। अब बेकार में ही पानी को क्यों पीट रहे हो।। 8।।

जब जीवित था तब तो प्रीतिभरी वाणी से इज्जत नहीं की (अब) मरे हुए उसी (शव) को रेशमी कफन से ढँका जा रहा है।। 9।।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)

नवदेहली